यस्य=जिसकी; **इन्द्रियाणि**=इन्द्रियाँ; **तस्य**=उसकी; **प्रज्ञा**=बुद्धि; **प्रतिष्ठिता**=स्थिर है।

अनुवाद

इसलिए सब इन्द्रियों का संयम करके भक्तियोग में लगकर मेरे परायण हो जाय। जो इस प्रकार इन्द्रियों को वश में करके अपनी बुद्धि को मुझ में एकाग्र करता है, वही मनुष्य स्थिरबुद्धि है।।६१।।

तात्पर्य

योग की परमोच्च संसिद्धि कृष्णभावना ही है, यह इस श्लोक में स्पष्ट रूप से कहा गया है। कृष्णभावनाभावित हुए बिना इन्द्रियों को वश में करना असम्भव है। पूर्व कथन के अनुसार, महामुनि दुर्वासा महाराज अम्बरीष से द्वेष कर बैठे और अहंकार से उत्पन्न व्यर्थ क्रोध के वशीभूत होकर अपनी इन्द्रियों का संयम नहीं कर सके। दूसरी ओर, मुनि के सदृश योगी न होने पर भी भगवद्भक्ति के प्रभाव से राजा ने मुनि के अनाचार को शान्तिपूर्वक सहन कर लिया। परिणाम स्वरूप, अन्त में उन्हीं की विजय हुई। महाराज की इन्द्रियाँ उनके वश में थीं, क्योंकि श्रीमद्भागवत (९.४.१८-२०) के अनुसार वे निम्नलिखित गुणों से युक्त थेः

स वै मनः कृष्णपदारविन्दयोर्वचांसि वैकुण्ठगुणानुवर्णने।
करौ हरेर्मन्दिरमार्जनादिषु श्रुतिं चकाराच्युतसत्कथोदये।।
मुकुन्दलिङ्गालयदर्शने दृशौ तद्भृत्यगात्रस्पर्शेऽङ्गसंगमम्।
घ्राणं च तत्पादसरोजसौरभे श्रीमत्तुलस्या रसनां तदर्पिते।।
पादौ हरेः क्षेत्रपदानुसर्पणे शिरो हृषीकेशपदाभिवादने।
कामं च दास्ये न तु कामकाम्यया यथोत्तमश्लोकजनाश्रया रतिः।।

'राजा अम्बरीष ने अपना मन श्रीकृष्ण के पदारविन्द में एकाग्र किया; वाणी को भगवद्धाम का वर्णन करने में लगाया, हाथों को हरिमन्दिर का मार्जन करने में लगाया, श्रवणों को हरिकथा सुनने में तथा नेत्रों को श्रीभगवान् के मधुर दर्शन में नियोजित किया। अपने गात्र से वे भक्तों का स्पर्श करते तथा नासिका से श्रीभगवान् के चरणारविन्द में अर्पित पुष्पों और तुलसी की सौष्ठव का आघ्राण करते थे; जिह्वा को भगवान् को समर्पित प्रसाद खाने में; चरणों को हरिक्षेत्र-गमन में संलग्न रखते तथा सिर से नित्य भगवत्-वन्दना करते रहते। इस प्रकार उनकी सम्पूर्ण कामना भगवत्-इच्छा की पूर्ति करने में ही तत्पर रहती थी। इन सब दिव्य गुणों से युक्त होने के कारण ही वे 'मत्पर' भगवद्भक्त बन गये थे।'

इस सन्दर्भ में **मत्पर** शब्द महत्त्वपूर्ण है। महाराज अम्बरीष का जीवन **मत्पर** बनने की पद्धति सिखाता है। विद्वच्चूड़ामणि तथा **मत्पर** परम्परा के आचार्य, श्री बलदेव विद्याभूषण का कथन हैः **मद्भक्तिप्रभावेन सर्वेन्द्रिय-विजयपूर्विका स्वात्मा दृष्टिः सुलभेति भावः।** ''कृष्णभक्ति की महती शक्ति के द्वारा ही इन्द्रियों को पूर्ण रूप से वश में किया जा सकता है।'' इस सन्दर्भ में अग्नि का दृष्टान्त भी दिया जाता है। घर के भीतर स्थित अग्नि की नन्हीं ज्वाला भी